6

एला

विरासत पाने के अयोग्य

वचन पाठ: 1 राजाओं 16:6, 8–10

1977 में कुछ मित्रों के साथ मैंने नये साल की रात राष्ट्रीय स्तर पर दिखाया गया फुटबॉल मैच देखा। दूसरी टीम द्वारा हावी होने की उम्मीद से एक टीम को पहले से ही हारी हुई माना जा रहा था। लग रहा था कि हम आसानी से जीते जा सकने वाले मैच को देख रहे हैं। हम दंग रह गए कि पहली किक से लेकर खेल के दूसरे हाफ के अन्त तक कमज़ोर लगने वाली टीम हावी रही और काफ़ी अन्तर से जीत गई। हमें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि जो टीम इतनी मज़बूत भी नहीं है, वह एक बढ़िया टीम से इतनी आसानी से कैसे जीत गई! यह कैसे हो रहा है? बाद में पता चला कि इसके पीछे के कारण को एक ही शब्द ''तैयारी'' में बताया जा सकता है। लोगों की पसन्दीदा टीम यह सोचकर कि ''हमें केवल खेलना है, जीत तो हम जाएंगे ही'' अतिविश्वासी हो गई थी। कोचिंग देने वालों ने मौसम का भी ध्यान नहीं किया था; तेज़ बारिश के कारण मैदान में कीचड़ हो गया था और टीम ने कीचड़ में खेलने के लिए उपयुक्त जूते भी नहीं लाए थे। परिणाम स्वरूप जिस टीम के जीतने की उम्मीद थी, वह फिसल कर पूरे मैदान में गिरती रही, जबकि कमज़ोर टीम जीतने और रिकॉर्ड बनाने के लिए दौड़ती रही। यहां मुख्य शब्द *''तैयारी''* है।

हमें हैरानी नहीं होनी चाहिए कि तैयारी बाइबल के प्रमुख विषयों में से एक है। खेलों में ही नहीं, जीवन के हर क्षेत्र में तैयारी आवश्यक है। इससे किसी को भी छूट नहीं है। परमेश्वर अपने आप को भी इससे छूट नहीं देता।

उदाहरण के लिए परमेश्वर ने अब्राहम को एक देश देने की प्रतिज्ञा की (उत्पत्ति 12:7), परन्तु इस्राएल की सन्तान अर्थात अब्राहम के वंशजों को प्रतिज्ञा किए हुए देश में लाने से पहले वह कम से कम 430 साल प्रतीक्षा करता रहा। तैयारी की जानी थी, और उस तैयारी के लिए वर्षों लग गए। परमेश्वर ने इस्राएल को कनान में ले जाने के लिए मूसा को अपने अगुवे के रूप में चुना, परन्तु परमेश्वर ने तैयारी करने के लिए मूसा को अस्सी वर्ष दिए, ताकि वह ऐसा अगुवा बन सके जिसकी इस्राएल को आवश्यकता थी। सही समय आने पर यानी जब सही ज़मीन तैयार हो गई तो परमेश्वर ने इस्राएल को प्रतिज्ञा किया हुआ देश दे दिया।

मसीहा अर्थात यीशु को संसार में लाना भी ऐसा ही था। परमेश्वर ने मानवीय इतिहास के दो युग, पुरखाओं के युग और मूसा के युग का इस्तेमाल संसार को उसके आने के लिए तैयार करने के लिए किया। मसीहा के आ जाने पर, पवित्र आत्मा ने उसके आने के पल को ''जब समय पूरा हुआ'' (गलातियों 4:4) नाम दिया।

मसीह का मार्ग तैयार करने वाले के रूप में लगभग एक वर्ष की सेवा करने के लिए ग्रेजुएट

होने से पहले यूहन्ना बपतिस्मा-दाता तीस वर्ष तक परमेश्वर के "प्रीचर ट्रेनिंग स्कूल" में था (मत्ती 3:1)। मसीह ने स्वयं तैयार होने और पृथ्वी पर अपनी सेवकाई आरम्भ करने के सही समय की प्रतीक्षा के लिए तीस साल लगाए (लूका 3:23)।

यदि परमेश्वर तैयारी से खुद को भी छूट नहीं देता तो पक्का है कि वह आप को भी छूट नहीं देगा। उसके वचन की चेतावनी है कि हमें तैयारी करनी आवश्यक है वरना उसके नतीजे भुगतने होंगे।

अवसर के उन पलों के लिए तैयारी न करने वाले उन अगुओं के बारे में विचार करें, जो प्रभावशाली ढंग से अगुआई नहीं कर पाए, उन शिक्षकों के बारे में जो सही शिक्षा नहीं दे पाए, उन प्रचारकों के बारे में जो लोगों को विश्वास नहीं दिला पाए, उन धावकों के बारे में जो अपनी क्षमता के अनुसार नहीं खेल पाए। संसार में सबसे अधिक दोहराई जाने वाली गलती शायद तैयारी न कर पाने की होती है। हम जीवन में यूं ही, दृश्यों का आनन्द लेते हुए निकल जाते हैं और फिर धड़ाम! एक बड़ा अवसर आता है और हम बिना तैयारी के पकड़े जाते हैं। फिर हम अपने शेष जीवन में "काश! मैं तैयार होता" नामक चाबुक से अपने विवेक की पीठ पीटते रह जाते हैं।

अधिक सम्भावना है कि इस्राएल के चौथे राजा एला की असफलता का कारण तैयारी की कमी ही थी। बाइबल के एक प्रसिद्ध लेखक डब्ल्यू जी. ग्राहम सक्रोजी ने उसे "मतवाला मूर्ख"[1] नाम दिया। उसका शासन एक विनाश था, क्योंकि वह कौम की अगुआई के लिए तैयार नहीं था। इस्राएल के तीसरे राजा बाशा का पुत्र होने के कारण, वह "मुंह में चांदी का चम्मच लेकर ही पैदा हुआ" था। उसके पास देश द्वारा अपने शाही परिवार को दी जा सकने वाली हर सहूलियत थी। उसे सम्भवतया बचपन से ही पता था कि अपने पिता की मृत्यु होने पर वह राजा के रूप में अपने पिता की जगह लेगा। एक दिन उसे सिंहासन मिल ही जाएगा और अगुआई के लिए लोग उसकी ओर देखेंगे। उसे तैयार होना चाहिए था। यदि वह परमेश्वर की आवश्यकता के अनुसार अगुवा बनना चाहता था तो उसे अगुआई के लिए तैयारी करते हुए बचपन बिताना चाहिए था। आवश्यक तैयारी के लिए समय और प्रयास, विचार और प्रार्थना लगन और अनुशासन आवश्यक था। प्रश्न यह नहीं था कि "क्या वह यह कर सकता है?" बल्कि यह था कि "क्या वह इसे करेगा?" किसी कारण उसने "न" में उत्तर दिया। हमें नहीं मालूम कि उसने तैयारी करना क्यों नहीं चुना। हमें तो इतना पता है कि वह सिंहासन पर बिना तैयारी के बैठ गया। परिणामस्वरूप उसका शासन थोड़ी देर का, अफसोसनाक और शर्मनाक था। उदाहरण बनने के बजाय वह एक गलती बन गया; विजयी बनने के बजाय वह एक त्रासदी बन गया।

वचन हमें राजा के रूप में एला के बारे में अधिक नहीं बताता। उसकी ईश्वरीय जीवनी केवल छह आयतों में लिखी गई है:

> यहूदा के राजा आसा के छब्बीसवें वर्ष में बाशा का पुत्र एला तिर्सा में इस्राएल पर राज्य करने लगा, और दो वर्ष तक राज्य करता रहा। जब वह तिर्सा में अर्सा नामक भण्डारी के घर में, जो उसके तिर्सा वाले भवन का प्रधान था, दारू पीकर मतवाला हो गया था, तब उसके जिम्री नामक एक कर्मचारी ने, जो उसके आधे रथों का प्रधान था, राजद्रोह की गोष्ठी की और भीतर जाकर उसको मार डाला, और उसके स्थान पर राजा बन गया। यह

> यहूदा के राजा आसा के सत्ताइसवें वर्ष में हुआ। और जब वह राज्य करने लगा, तब गद्दी पर बैठते ही उस ने बाशा के पूरे घराने को मार डाला, वरन उस ने न तो उसके कुटुम्बियों और न उसके मित्रों में से एक लड़के को भी जीवित छोड़ा। इस रीति यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उस ने येहू नबी के द्वारा बाशा के विरुद्ध कहा था, जिम्री ने बाशा का समस्त घराना नष्ट कर दिया। इसका कारण बाशा के सब पाप और उसके पुत्र एला के भी पाप थे, जो उन्हों ने स्वयं आप करके और इस्राएल से भी करवा के इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को व्यर्थ बातों से क्रोध दिलाया था। एला के और सब काम जो उस ने किए, वे क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं (16:8-14)।

एला सिंहासन पर बैठा और 888 से 886 ई.पू., दो वर्षों के कुछ भाग उसने शासन किया। केवल यही कहानी है यानी उसके बारे में बताने को कुछ और नहीं है। उसका थोड़ी देर का शासन उसकी ओर से किए गए किसी महत्वपूर्ण काम के बिना ही बीत गया। उसे उन लोगों द्वारा, जिनकी वह अगुआई करता था या उसकी अपनी सेना में आदर की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता था।

एक दिन अर्सा के घर जो ''तिर्सा का महापौर'' था, एला तिर्सा में नशे की हालत में था। अवसर के इस पल में राजा के रथों के आधे बल के सेनापति जिम्री ने उसकी हत्या कर दी। हो सकता है कि अर्सा एला की हत्या की योजना में शामिल हो। एला की मृत्यु से इस्राएल के दूसरे राजवंश का अन्त हो गया। राजा के रूप में अपने पहले कार्य में जिम्री ने येहू की भविष्यवाणी के अनुसार बाशा के सभी रिश्तेदारों को मरवा दिया (16:4)। जिम्री ने बाशा के घराने के सब लोगों को मरवा दिया और किसी लड़के तक को न छोड़ा (16:11)।

एला शासन करने के लिए अपने आप को तैयार कर सकता था। यदि वह तैयार होता तो उसका शासन कितना अलग होता! हम नहीं जानते कि यदि वह तैयार होता तो परमेश्वर उसके द्वारा क्या कर सकता था, पर इतना जानते हैं कि परमेश्वर उसके साथ और उसके द्वारा अद्‌भुत काम करता।

वह कैसे तैयार हो सकता था? वह क्या कर सकता था?

परमेश्वर की सुनकर

पहले तो एला परमेश्वर की सुनकर नेतृत्व की इस स्थिति के लिए तैयार हो सकता था। परमेश्वर के नबी निकट थे और वे परमेश्वर की इच्छा प्रकट कर रहे थे। यारोबाम के पास अहिय्याह और एक अनाम नबी था (11:29; 13:1)। बाशा के पास येहू था (16:1) और हमें यकीन है कि और नबी भी होंगे। सिंहासन पर आने से पहले एला के पास नबियों से परमेश्वर की इच्छा जानने के कई अवसर थे। वह उनके संदेश के लिए अपने मन को खोलकर समझ सकता था कि उसके जीवन और लोगों के लिए परमेश्वर की क्या इच्छा है। यदि वह बचपन में अपना मन परमेश्वर की इच्छा के लिए दे देता तो राजा के रूप में परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए उसकी तैयारी हो जाती।

हो सकता है कि हम सुनें तो सही पर ध्यान न दें, ध्यान दें पर उसे समझें न। यीशु ने उन लोगों की बात की, जिन्होंने अपने कानों से न सुनना, आंखों से न देखना या मनों से न समझना चुना था

(मत्ती 13:15)। पौलुस ने ऐसे लोगों को "सदा सीखती तो रहती हैं पर सत्य की पहचान तक कभी नहीं पहुंचतीं" (2 तीमुथियुस 3:7) कहा। सम्भवतया यह वाक्यांश एला पर फिट बैठते होंगे। उस के पास सीखने के लिए अवसर थे, परन्तु उसने उसे मिले अवसरों को नज़रअंदाज़ किया। वह परमेश्वर के नबियों से सुन सकता था कि परमेश्वर उनसे क्या चाहता है, परन्तु या तो उसने उस संदेश के बारे में सोचा नहीं या उसके महत्व को नहीं समझा। जब उसे सिंहासन की विरासत मिली यानी जब उसका लोगों के लिए आदमी बनने का समय आया, तो उसे स्पष्ट समझ नहीं थी कि धर्मी राजा कैसे बनना है।

परमेश्वर हमारे लिए कई अवसर देगा। क्या हम उस राजा की तरह बिना तैयारी के होंगे, जब हमें अवसर मिलेंगे? परमेश्वर ने हमारे साथ अपने वचन के द्वारा बात की (इब्रानियों 1:1, 2), परन्तु क्या हमने इसे मान लिया है? इस्राएल के कनान का विश्राम लेने की तैयारी के समय यहोशू ने लोगों को अपने आप को कल के लिए पवित्र करने को कहा (यहोशू 7:13)। उन्होंने अपने आप को कल के लिए कैसे तैयार करना था? उन्होंने इसे अपने मनों को परमेश्वर की इच्छा से मिलाकर अपने जीवनों से पाप को निकालकर और परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने के लिए अपने आप को तैयार करना था। किसी कारण उसने तैयारी के अपने समय को बर्बाद कर दिया। जब उसे विरासत मिली तो वह इसके अयोग्य था।

परमेश्वर के साथ चलकर

राज्य का राजकुमार होने के कारण एला अपने आप को राजा होने के लिए एक युवा के रूप में परमेश्वर के साथ चलकर तैयार कर सकता था। राजा लोगों के सामने परमेश्वर का प्रतिनिधि होना था। वह कोई राजनीतिज्ञ नहीं, बल्कि शासक होना था, जिसने लोगों को परमेश्वर के मार्गों में अर्थात सही मार्ग में दिशा देनी थी। देश और संसार के लिए परमेश्वर की इच्छा पर प्रार्थना और मनन के द्वारा परमेश्वर के साथ प्रतिदिन चलने से बढ़कर उसके लिए और तैयारी क्या हो सकती थी? यदि वह अपने आरम्भिक वर्षों में परमेश्वर के साथ चलता तो वह लगन, ईमानदारी और सही समझ वाले व्यक्ति के रूप में सिंहासन तक पहुंचता। वह शक्ति की समझ के साथ अपने सिंहासन तक आता, क्योंकि उसे अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति की समझ होती। वह परमेश्वर द्वारा स्वीकृत राजा होता और उसके धर्मी जीवन से लोगों में उसका सम्मान हो सकता था। वह और अधिक प्रभावशाली ढंग से लोगों की अगुआई कर सकता था।

परमेश्वर के साथ चलने की बात सोचकर हमारे दिमाग में हनोक आता है (उत्पत्ति 5:22)। उसके जीवन के लिए परमेश्वर का ईश्वरीय अवलोकन यह था कि वह "परमेश्वर के साथ-साथ चलता" था। उसके जीवन में कोई बनावटी बात नहीं थी, कोई कपट नहीं था। वह प्रतिदिन परमेश्वर के साथ चलता था। उसका "परमेश्वर के साथ चलना" यह बताता है कि परमेश्वर के साथ उसकी संगति थी यानी वह परमेश्वर की दिशा में जा रहा था और परमेश्वर की जगह में जा रहा था। यह जीवन शैली भविष्य के लिए आवश्यक तैयारी है। हम परमेश्वर के साथ संगति में रहना सीखकर, उस दिशा में जाना सीखकर जिसमें परमेश्वर हमें ले जाना चाहता है और उस गति से काम करके, जिसमें परमेश्वर हमें काम करवाना चाहता है, कल के लिए तैयार होते हैं।

मान लीजिए कि एला ने राजा बनने से पहले ऐसी तैयारी की थी तो वह कैसा राजा होता?

शायद हम उसकी तुलना वैसे करते जैसे दाऊद की करते हैं। हम कहते, ''आपको एला जैसा आदमी बनना चाहिए, यानी परमेश्वर के मन के अनुसारी, जो परमेश्वर के साथ चलता था।'' उस राजा के बारे में सोचें, जो वह बन सकता था, यदि वह जीवन के आरम्भ में परमेश्वर के साथ चलना सीख जाता!

परमेश्वर में भरोसा रखकर

एक और ढंग जिससे सिंहासन के लिए एला को तैयारी करनी चाहिए थी, वह अपने आरम्भिक वर्षों में परमेश्वर में भरोसा रखना सीखकर था। उसे परमेश्वर की आज्ञा मानना और उसकी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिए उसमें भरोसा रखना आवश्यक था। परमेश्वर के लोग होने के लिए, पूरे इस्राएल को परमेश्वर की आज्ञा और उसमें भरोसा रखने में अगुआई देना आवश्यक था। परमेश्वर की बात मानना एक बात है; हमारी देखभाल के लिए और हमें आशीष देने के लिए परमेश्वर में पूर्ण भरोसा रखना दूसरी बात है। दोनों को मिला दें तो आप उस व्यक्ति के जीवन को जो परमेश्वर के वचन की बात मानता और जो उसने प्रतिज्ञा की है, वह करने के लिए परमेश्वर में भरोसा रखता है, आप उसके जीवन को भक्तिपूर्ण देख सकते हैं।

एक राजा को अपनी कौम के लिए स्थिर करने वाली शक्ति होना चाहिए। जब समय कठोर थे और युद्ध के बादल मंडरा रहे थे तो इस्राएल को ऐसे अगुवे की आवश्यकता थी, जो उन्हें यह याद दिला सकता कि ''परमेश्वर हमारे साथ है। हमने उसकी बात मानी है और वह हमारे लिए युद्ध लड़ेगा और हमें शत्रु के हाथ से छुड़ा लेगा। फिक्र न करो। अपनी आंखें यहोवा पर लगाओ।'' इस स्तर का राजा बनने के लिए एला के लिए कई परिस्थितियों और कठिन हालात में परमेश्वर में भरोसा रखने के इतिहास वाले सिंहासन पर बैठना आवश्यक था। उसे युद्ध में प्रशिक्षण की नहीं बल्कि विश्वास से रहने के अनुभव की आवश्यकता थी।

एला ने कभी परमेश्वर पर भरोसा रखना नहीं सीखा। शायद उसने धन, पदवी, विरासत और अपने शत्रु पर भरोसा रखना सीखा था। इसी कारण सिंहासन पर वह अपने दम पर बैठा था। परमेश्वर उन्हीं की सहायता करता है जो उससे सहायता मांगते हैं। वह पृथ्वी पर उन लोगों की खोज में नहीं रहता जिनके मन अपने आप में सिद्ध हैं कि वे दिखा सकें कि वे कितने मज़बूत हैं (2 इतिहास 16:9)। एला को परमेश्वर की आवश्यकता नहीं लगी और परमेश्वर ने एला को बिना परमेश्वर के रहने की पसन्द के परिणाम भुगतने के लिए छोड़ दिया।

सारांश

सम्भवतया एला इस्राएल के महानतम राजाओं में से एक हो सकता था, परन्तु वह बिना तैयारी के था। जब उसे उसकी विरासत मिली तो वह इसके अयोग्य था। उसे राज डंडा दिया गया परन्तु उसे मालूम नहीं था कि इसका क्या करना है। तैयारी की उसकी कमी उसके शासन में, उसके जीवन में और उसकी मृत्यु में देखी जा सकती है।

एला को केवल ''हो सकता था'' वाले राजा के रूप में ही याद किया जा सकता है। वह असाधारण हो सकता था। वह इस्राएल जाति को परमेश्वर की ओर वापस ला सकता था और परमेश्वर का नायक बन सकता था। इसके बजाय वह एक बेकार शराबी की मौत मरा। उसकी

कब्र पर इससे दु:खद शब्द नहीं लिखे जा सकते:

यहां
इस्राएल का चौथा राजा
एला
पड़ा है
शासनकाल: 888 से 886

जब उसे महानता दी गई,
तो इसे लेने के लिए उसकी तैयारी नहीं थी।

हमारे साथ कैसा होगा? क्या हम तैयार होने की आवश्यकता को नज़रअंदाज करेंगे? हम में से हर एक के जीवन में महत्व के ऐसे पल आएंगे, जो हमसे तैयारी की उम्मीद करते हैं: हमारे सामने दूसरों को मसीह, मृत्यु, यीशु के वापस आने, न्याय के दिन तक ले जाने के अवसर आएंगे। आमोस ने ललकारा था, ''अपने परमेश्वर के सामने आने के लिए तैयार हो जा...'' (आमोस 4:12ख)। क्या हम उससे मिलने को तैयार होंगे? हमारे जीवन समाप्त हो जाने के बाद हमारी कब्रों पर क्या लिखा जाएगा? हम ''तैयार'' होंगे या ''बिना तैयारी के''?

हमारे प्रभु की दस कुंआरियों वाली उस कहानी को याद रखें, जो अपनी-अपनी मशालें लेकर दूल्हे से मिलने गई थीं (मत्ती 25:1-13)। उनमें से पांच तो तैयार थीं, परन्तु पांच नहीं। जब भीतर जाने का पल आया तो पांच अन्दर चली गईं और पांच नहीं। इन उदास करने वाले शब्दों पर मनन करें। शायद पूरी बाइबल में उदास करने वाले यही शब्द हैं: ''... और द्वार बन्द किया गया'' (आयत 10)। ''और द्वार बन्द किया गया'' पर विचार करें। उनके हाथ से अवसर निकल चुका था, जो दोबारा नहीं आ सकता था। पांच कुंआरियां अन्दर जा सकती थीं, परन्तु वे तैयार नहीं थीं, यानी अपनी मीरास पाने के अयोग्य थीं। परमेश्वर ने उनसे कहा, ''तुम अन्दर नहीं आ सकतीं क्योंकि तुम तैयार नहीं हो।''

सबसे बड़ी त्रासदी अन्त के दिन प्रभु हमें यह बताएगा कि ''तुम स्वर्ग में नहीं आ सकते क्योंकि तुम तैयार नहीं हो।'' आइए यहां ठान लें और अभी ''तैयार'' हो जाएं।

सीखने के लिए सबक:
विश्वास में चलना और परमेश्वर की आज्ञा मानना अभी से सीखें,
ताकि स्वर्ग में अपनी मीरास लेने के लिए तैयार हो सकें।

टिप्पणी

[1]डब्ल्यू. ग्राहम सक्रोजी, *द अनफोल्डिंग ड्रामा ऑफ रिडेंप्शन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1976), 301.